

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

मान्य निर्मा स्थानित । अपनि स्थान स् 11911 भिषानि निमम पल इपणानि विकि सित होन विकि सितेन पिन्समहैत स्विभागिभवात्रयक्षानमतोगमान। द्रापार्ण्यमंकी यन तीर्ष त्याचे वणके पत्वमथां गविष्ठानं । यत् स्वनित्य भीति स्वनित्य भीति वायोगवदालें से संक्रानाः भार्षद्विद्यहरोगान् व गंधा मुकेर विपान के की बाजा । पर गाप म छ बिया मराह रह स्मा विशस्य कमा लेवर तित्तना १४) में दिन है ज्ये त सामित व अर स कें र र ने होप देह सिन मित स लोगाः । उन्हें र सं ताप चित्र किया में कुफ स्पन्त मिन व दे तित्रानाः १५ । मारिर ने म ब्रांग पणा नि विषाणि अर ता निन्य बाल त

Ace. No. H27 m-1682
Title - STOTETTETTOTION.
Author- yorktor.
Date- 8
Sub - medicine.
fulio- 9
Xerox-17

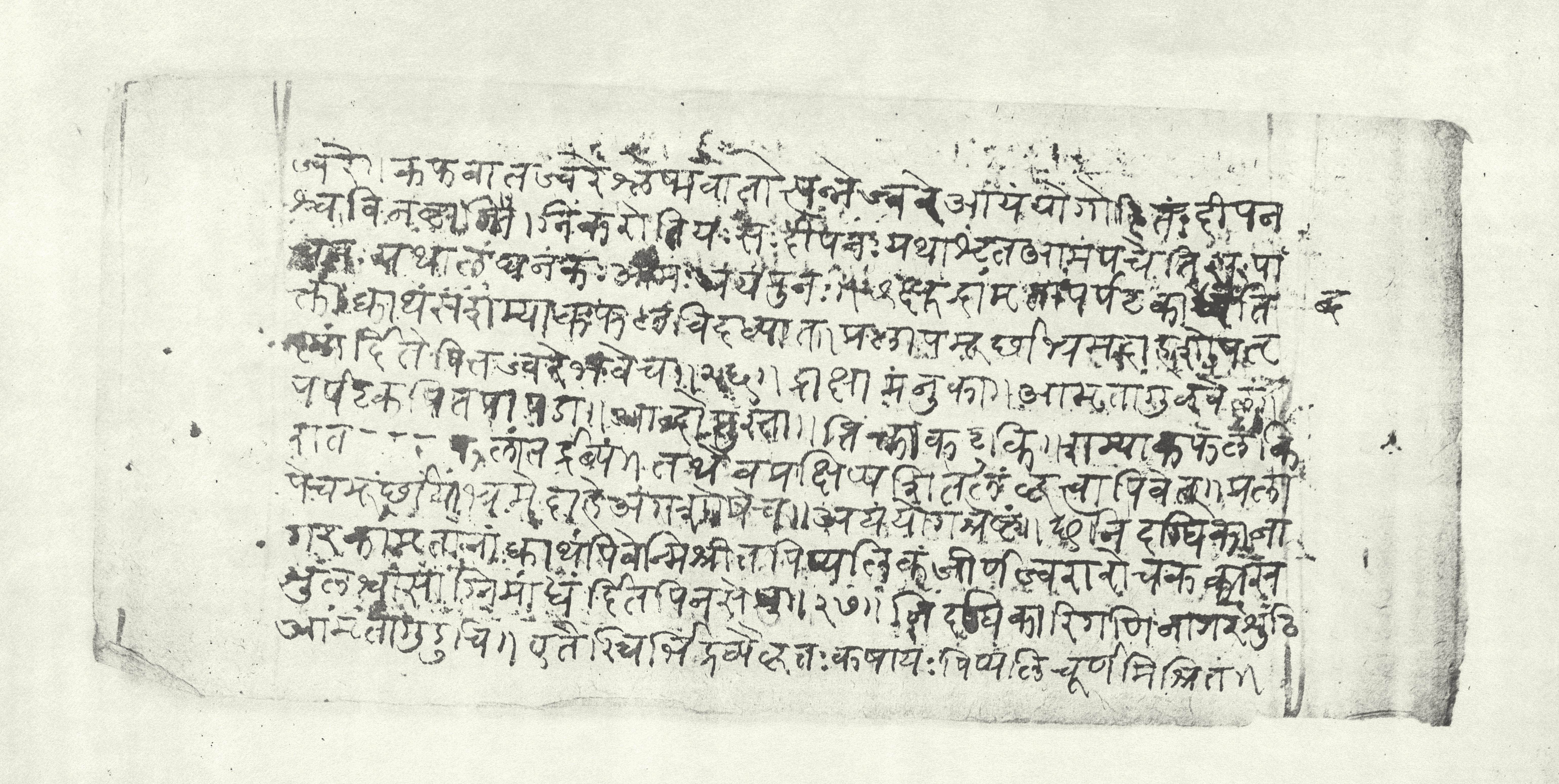


अंगरसायनं पंचिधंयकं में आयां ग्रामा कथयं वियाः गाध्य छिनो स्या य्थर्थन्य ययास विमेर् न्य विपर् हम मध्य किरात तिनि म् शाहरत्यम् महीयधा धन्यमासिः कार्धिये इनित्र विसक्षा फः उयरेषु गाव अति जनर क देन जो भी लेकं पश्चमा शाप ने मह प्रनिध कं भणे।। शिर स्वं वित्याश्वा तिष्यको देशने राषा। दाने ने सक्त र्धाणि द स्मतास्य क्षणाम् ने हो हमता र भिने ब भा ति के उचर कहा जा । ति शाचा हा है हर तेसा कर्का सम्हा चिश्वमः ॥ प्रकाषा विन्हल भ्ये व पुरव पानोध्य अपन स्ति।।१०। इति विन्न न्यर लहर्मणा। कारपन्यासप्रितिशायप्रसे यह छ ध्याप्यकः॥ निरायस्य हे खास सि मिताम धरास्य ता ॥११॥ वितरोमावतारभ्य। महिन्य भूकता। उद्या भिला प्रता मिति शहा प्राक्त ज्वर हिम्मा। ११। भारा। भारा अवर का प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्र प्राप्त 7/171 वेल्या क्रांब्र्य क्रम्म मार्था ध्रम्य वाताः ध्रमारा ११ विश्वा क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र विवेद्य क्रिक्र क्रिक्र विवेद्य क्रिक्र क्रिक्र विवेद्य क्रिक्र क्रिक्र विवेद्य क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र विवेद्य क्रिक्र क्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्रिक्र क्र

ज्यराद्राति । १९५१ रम् व्यस्यित् खान्य हाहा की ततं प्रारं विश्वमः। करक् जनकणातिचन्त नेनप्रतापता। १६११ पीतिनिस्बनम् छित्रिंगानिम् १११यो विविधानियाम्य स्वाम्य के भ्वासः सं निवात उच्चरम्प है। सर्वारिया निवासा ध्यः करूसा ध्या न्यतामतः । १९६१ । बाहा पर्वा हिंद । । गुर्व बेला । भद्र माथा। भुढि। पिर्पापणा। भिरा ता। 11211 ---- एतानिं जोषधानिकषाययोजनियानि। बातश्रेषाज्यर्थः।।गुळवला। ११२मायो। यमासास्रिकाराज्यसाः पृष्ठ नयस्यार् एता मिन्द्यानिकायार् द्या पे सुश्लेषा ज्यरदेयः। धमासा। वितपाप्रा। भन्दमोधे। विरादि। कर्षिः। अ। उ। असाधिक्षि। यस्वशासाक्षेत्र यात्रिक्षायाया मनिषानि। 171 वाप्राधिन विकास है। असे विकास के ब्राम् कि से सामित वाप्राधिन के वाप्राधिन के विकास कि से से कि से सा कि सा कि से सा कि सा कि से सा कि

विधिवन्तुर्तं ॥ सं निपाल वरहणात्र यो द्वा विधिवन्तुर्तं ॥ सं निपाल विधिवन्तुर्तं ॥ सं निपाल विधिवन्तं ॥ स्विधि विद्या । स्विधि । ।

कि। कि हिंग रिस्तिन। गंजां वा जा विप जिए देश मूळ ॥ एतत्क प्रापं पिल्यं न्ण निश्चपेना था।। जन्म हा कड्का राज्ना पंगे संस्थ किशा तक ॥ कफा विन्ते। ज्यर हथ भये द्वापनपाचनं। स्थापतानागरपुष्य गारुये स्तः कषा योक्षमार्तोत्तरो सभासामानाम् विवाश्वरिक्षरे उनेर जिसे भविष्मस्थते। २४। १३-६। १माना ग्रांमता ग्रांमता ग्रांमता ग्रां भविष् अकरा व्या मुखा हिन्निश्च तु सिर्दि द तथा वाषः।। कफ्वाता स रें उपश्वास्त्रक्त का उध्ये अत्यक्ते पाश्वित्र कर करे विशेष प्रभरते देयः। ध्र असर्ग्य धिक तिक्ता स्वीत्तिकिनिः कि धितकषायः साम स्थितं का प्रवास्य पुने ज्यरिति हो से प्रभाव विकास्तः।। १५।। अगस्ति ।। बाह्ना गिलियात्वस्वक्षम् स्तानिक्षान् क्षाया। तिस्तान इति। इति कि इर्गा एतपेन इमेहितः काणां कि केरो विभाग उचरे स्वश्वा । आमदोष तं श्वा



। पद्म व्याणां का पर विस्तान किया मान इपि हो तह हि से वद र है। र्णितंब्बर्दारम् के अगत्मामार्गा ॥ ध्राप्ति विवेदाक्ता मृत्यमित र्षान्ति को देविल अभिक्षणा कषा यः तेत्रा प्रतीपक्षिणाः रिति हिन्दाः सानिति अभिक्षिणाः निया किर्निहास हेन होने । हमाम का बिन्या मिया स्यानाय हो।

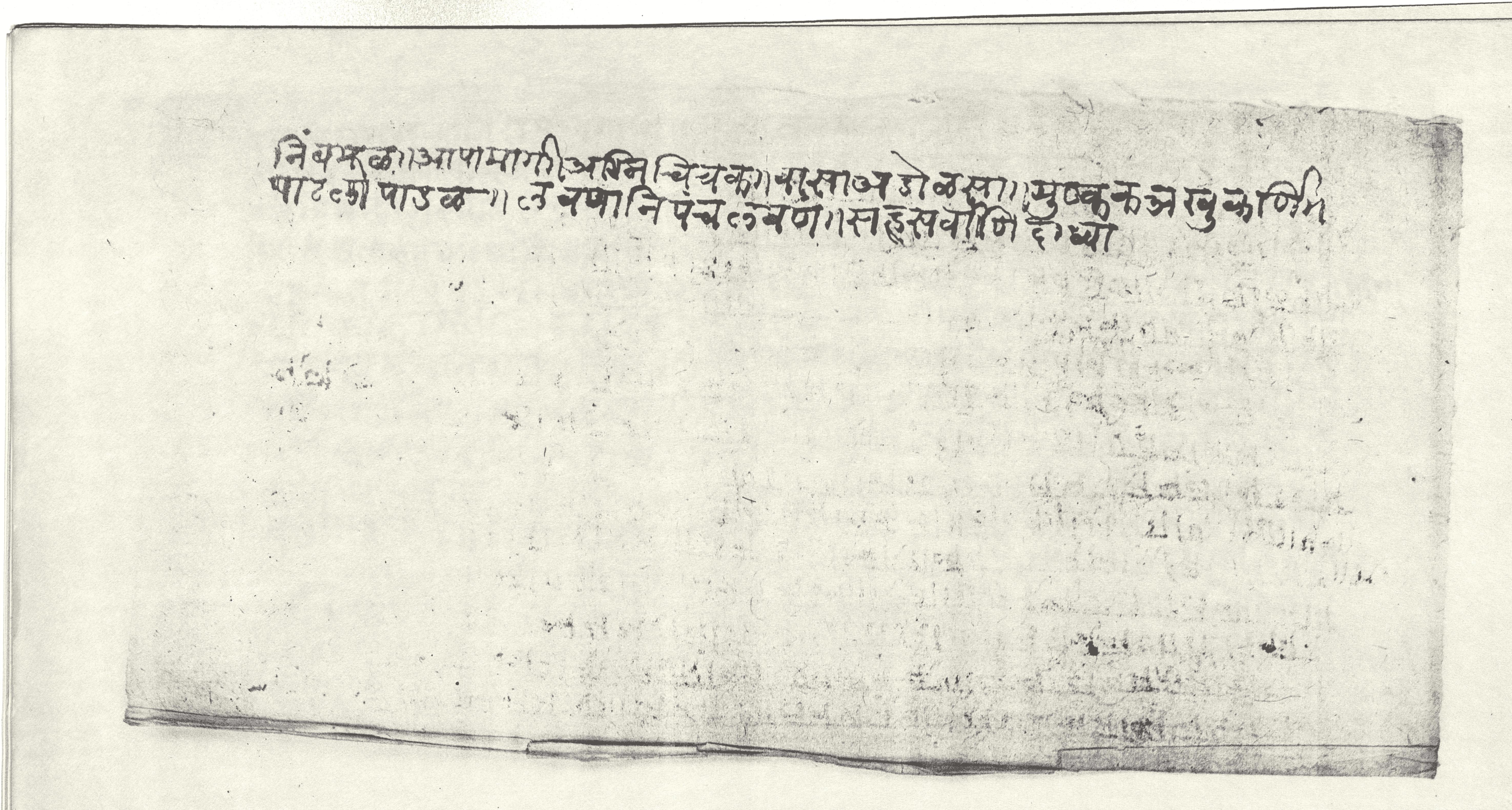
सत्योणितसरके विर्प्य रति दी चिका त्रप्यतं क्रितारित त्राप्णा धान्य स्ताचा उनी र विल्लं में बना त्रा आम् मुलं विका धं द्रां पाय वे वे ति दी पनं एका प्रांची धने त्रा विल्लं में बना त्रा प्रांची धने त्रा त्रा विल्लं वे ति दी पनं एका प्रांची घने प्रांची विल्लं वे ति दे ते ही प्रांची प्रांची प्रांची के विल्लं वे ति हो प्रांची प्रांची के विल्लं के ति हो प्रांची के विल्लं के विल्

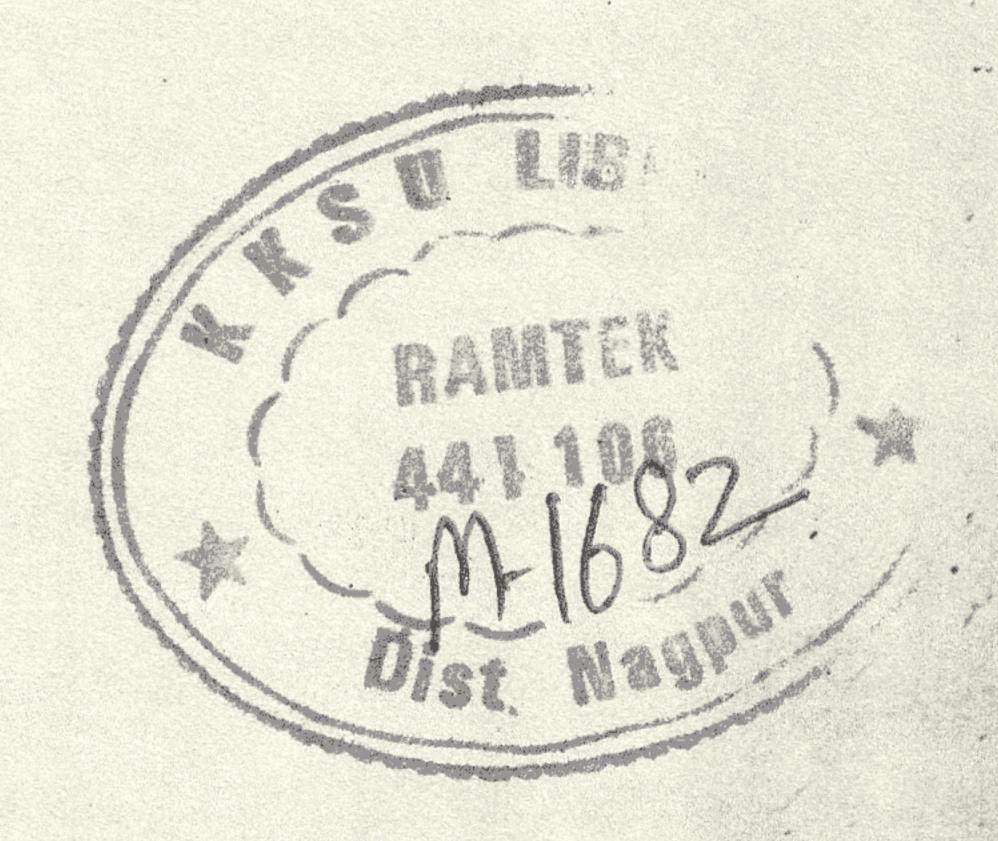
मधायाद्वस्य स्व १९०० विन्न नित्त ते निवन विन्न विन्न विन्न स्व १९०० विन्न स्व १०० विन्न

रवर सान्य विनिह्न स्थान्य मिना भ्या गान्य । अशामस्तारेगान्य पणिष्ठ स्वपालि। फला त्रिक लागरार देव हार गासिक संवक्ता गासिक ता किया है। श्री गार्थ विशेष के से से अपयाद्य स्थित के राशि मार्ग क्यें मिल स्था रती बमी निहंशि म् खार्न यमस्तमाहा स्मिन् निर्मागान्य व सि। णाबिहर कर ते विचुपद्व वाजिक इ निर्मा अस्ता सिहिता पत्र मु अधनिषिद्धार्मेद्धिमिकारिशातोन्पिनान्यात्रीत्र । अद्भावाद्यान्य ति । यवं वियुम्देनिव्यया।। श्रीकंद्रकेश्वामरेपिप्रिया विष्णा। त्रिस्तिन मानाय अस्य युत्र जागाम् या विश्वा द्वा सम्पद्दिन विश्व द्वा स्वारमा ता स्व नाषायनिं। द्विकारियानाना दाषा छो। संबद्धानिं। स्वितारविद्यादि यागाः । एक दर्शन संदेशका विशादर्शियानि वाश्यानिया निया निया निया त्निताय विस्मान्य निम्ने निम्ने विष्ण विष्ण विष्ण विष्ण द्री रित्र मित्रा स्वर । विसा ति दे द्वार जि मता निः का ध्य क वा परं स्वर पति । विसा पति व व पति । व व व व व व द्रश्यमम् श्रेष्णा ७ एत्वापम् त्यापषु कृत्याकारमजतुष्ण पार्चरामानित्वसः व्यापाति । प्रशापित्वाति । प्रशापिति । प् विभिद्यक्षिणिवत जल्लम् धानंदान्य निम्मान्य निम्मान्य रनिहाने आक्षा विद्यान ना सायाता गणा हिता के नो स्वया अवस्य पा पाणि सह न्ययवा स निष्या यन्त्रा का चिवते ना क्षित्रा प्रयक्ते प्राप्त है। प्रमान के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के रिताना जारहरू जोमन तासापार्वणित्र ।। धना येथास धमासा। पतेषार् ॥ ७॥ व्याधा धा धा भा स्त्र संप्रमुक्षित्व सामाधी संबुमहान एम अस्य प्रवा सहारुआक्षिद्धमानं म्हन्नवणस्य डोही जनस्नायाविव वेधा स्यानिर्धिना एव महार्थ कारिहे ति विकासिका । भारति का स्मानिक विकासिका निर्मा के लिया ति का निर्मा के लिया ति का निर्मा के लिया ति का निर्मा के लिया कि का मिला कि का क सर्कार्यनापनाम्याणकार्याणकार्याम्यान्याम्याणः आतंत्वम्यराप्या स्थिति की विशामित्र मानिति विश्विणी विस्थिति। जिस्सिति। जिस्सिति।

वासामग्रह वे का में महिलाह वामान महत्र है है है के ने का प्राप्त प्राप्त प्राप्त के निर्माण के स्थापन के निर्माण के निर्माण के स्थापन के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्माण के निर्मा म्लाश्रीतिमानश्रास्यक्षद्यः अस्ति हरं माहारकं मिल्परं रित्रणा विनाय महित्य के काम मं निह ति। ७०० एरेड विस्य सहित्य मा त ति गंवाबाणाने विकटमहर्ण सहिं वा या। या स्वारिता हर से गोर हों 5 त्रात्रिक्षक्रम्णार्मद्रहिष्टासम्बद्धार्था। १६०। ल्या म्हण्या भेरें।।। जिना उस लगा क्षित्र भेर का एल स्वास्त्र सामा प्राथित स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र ते जेका एउउस हर भिश्वातं विद्या की तार्वित कि छ इन्। उत्ति में प्रमुद्र भि रद्यं सनी चवते महेना. येन अधा अवित राष्ट्रा रयोगः। भागातं गुप्य म नो दर जी जीववृद्ध वा सु ॥ दुष्ठ ॥ हिंगु प्राणि चुष्य गोधा वेरवंड २ ॥ विद्राव उत्तर म जा ३ । श्रीका १११३ माजा जा जा स्र ११ पा हिंदित कि । ६ १ पुष्कर मह जा जा कुछ । दे । भा जा चरे हिंचा दिल्या एका दे । एका चरे रू धा यो नय तथ जि दे तं उद्या दक्त जि ब त दिम सत्ते पंगु म्त उद्दर यथा जा जी जी चित्र विद्राव विजित निर्मा चिह ज्यादियागाचा युणीतमं स्च का हिंगु महाष चे नुष्ठमा बुना कष्ठा समित्र रमियास्यास्यास्य एक स्वयाति विष्विकास प्रयोग व्यस्ते मस्विधि ।। दा धारधार्यिकं सायति छ। विद्यानिष्य मिष्टि । प्रतिषानिष्य । नापियत् कप्तिम्प्यास्थास्य प्राम्यास्थित् प्राम्यास्य स्थान्यस्य ययद्यायान् विष्णान्तर्याः एक अधायायायायागः।। दश्य प्राचित्रप्रयाजिति मिर्ध्यया विस्थाप्य संस्तर चित्र देव विणाप धारण । देव विचित्र प्रिम स्तु युत्ते प्रयोज्ये उ लेको दर् रिणान्ययम् विविधान्य विविधान्य विविधान्य विविधान्य ।

ण्तानसस्यानसम्भागानियः स्वात्वणप्रधानसे धवं यप्राक्षिण्यतस्र ता दिर् यं जातं पात्य रिवं संस्कृताका रिवं सर्वे य्यादिस्त दि विमानत्य ते प्रयो ल्याप् वेत्र ग्रुक्ताद रम्य थु सवं गित्राके गर्पा प्राप्त न्य स्वर न्यात्य के प्रयो प्रवाद स्वनं गणा श्रेरे निकद्व प्रस्व प्रयो प्रकारिका गित्र प्रस्त ना सवणा निष् न्यामा व्यं पि वेद नि शिर्ण सके ना श्रिका भागा विमान स्वर्ण विषय प्रयो श्रेरिका मा कर्षा प्रस्ति भागा विषय प्रस्ति स्वर क्षा प्रमान के प्रवाद प्रमान विषय क्षा प्रमान के स्वर्ण विषय क्षा प्रमान के स्वर प्रमान क्षा प्रमान के स्वर प्रमान क्षा प्रमान के स्वर प्रमान के स्वर प्रमान के प्रमान के स्वर प्रमान के स्वर





,CREATED=23.09.20 11:18 TRANSFERRED=2020/09/23 at 11:21:24 ,PAGES=17 ,TYPE=STD ,NAME=S0003664 Book Name=M-1682-YOGSHAT TIKA ,ORDER\_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF ,FILE10=0000010.TIF FILE11=0000011.TIF FILE12=0000012.TIF FILE13=0000013.TIF FILE14=0000014.TIF FILE15=0000015.TIF ,FILE16=0000016.TIF ,FILE17=0000017.TIF

[OrderDescription]